ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

नेपियर घासः पशुओं के लिए एक उत्तम हरा चारा

डॉ.श्रुति गर्गऔर डॉ. महेन्द्र सिंह मील

वेटरनरी कॉलेज, नवानिया, वल्लभनगर, उदयपुर

नेपियर घास, जिसे हाथी घास भी कहा जाता है, एक बहुवर्षीय चारा फसल है जो पशुपालकों के लिए एक बेहतरीन विकल्प है। यह घास तेजीसे बढ़तीहै, अधिक उपज देती है और पोषक तत्वों से भरपूर होती है। इसकी विशेषता है कि यह बार-बार कटाई के बादभीपुनः उग आतीहै , जिससे पशुपालकों को साल भर हरा चारा उपलब्ध हो सकता है।नेपियर घास विशेष रूप से दूध देने वाले पशुओं और ऊँट, घोड़े, भेड़-बकरी आदि के लिए अत्यधिक लाभकारी होती है।

बुआई एवं प्रबंधनः

नेपियर घास की खेती के लिए गर्म और आर्द्र जलवायु उपयुक्त होती है। इसकी बुआई मुख्य रूप से फरवरी से जुलाई तक की जाती है।

ISSN: 2583-0511 (Online), www.pashupalakmitra.in

- ✓ **मृदा एवं जलवायु:** नेपियर घास लगभग सभी प्रकार की मिट्टी में उगाई जा सकती है, लेकिनअच्छे जल निकास वाली उपजाऊ दोमट मिट्टी सर्वोत्तम होती है।
- ✓ **बुआई का तरीका:** इसे मुख्य रूप से स्टेम कटिंग (तने की कटिंग) द्वारा उगाया जाता है। प्रत्येक कटिंग में 2-3 गांठें होनी चाहिए और इन्हें 2-3 सेंटी मीटर की गहराई में लगाया जाता है।
- ✓ **खाद एवंसिंचाई:** अच्छी बढ़वार के लिए जैविक एवं रासायनिक उर्वरकों का संतुलित उपयोग आवश्यक है। प्रति हेक्टेयर 20-25 टन गोबर की खाद के साथ 100 किग्रा नाइट्रोजन, 50 किग्रा फास्फोरस और 40 किग्रा पोटाश डालने से अच्छी पैदावार मिलती है। सिंचाई मौसम के अनुसार की जानीचाहिए, गर्मी में अधिक सिंचाई आवश्यक होती है।
- ✓ **कटाई एवंउपज:** पहली कटाई 60-70 दिनमें की जातीहै , जबकि बाद की कटाई हर 35-40 दिनमें की जासकती है। प्रतिहेक्टेयर 200-250 टन तक हरा चारा प्राप्त किया जा सकता है।

पोषणीय विशेषताएँ:

नेपियर घास पशुओं के लिए एक बेहतरीन ऊर्जा और प्रोटीन स्रोत है। इसकी पौष्टिक संरचना निम्नानुसार है:

- ❖ शुष्क पदार्थ - 20-25%
- ❖ क्रूड प्रोटीन- 8-12%
- ❖ रेशा -25-30%
- ❖ एनडीएफ -55-65%
- ❖ एडीएफ - 35-45%
- ❖ कैल्शियम- 0.3-0.5%
- ❖ फॉस्फोरस- 0.2-0.3%

इस घास में उच्च मात्रा में रेशा और पाचक तत्व होते हैं, जिससे यह पशुओं के पाचन तंत्र के लिए अनुकूल होती है।

पशुओं को खिलाने की विधि:

नेपियर घास को हरा, सूखा चारा या साइलेज के रूप में खिलाया जा सकता है।

- ✓ **हरा चारा:** ताजा कटी हुई नेपियर घास को सीधे खिलाया जा सकता है, लेकिन अधिक पुरानी और सख्त हो जाने पर इसे काटकर खिलाना चाहिए।
- ✓ **साइलेज:** अधिक मात्रा में उपज होने पर इसे साइलेज के रूप में संरक्षित किया जा सकता है, जिससे साल भर पशुओं को पौष्टिक आहार मिल सके।

- ✓ **अन्य चारे के साथ मिश्रणः** इसेअन्य लेग्यूमिनस चारे (जैसे बरसीम या लूसर्न) के साथ मिलाकर खिलाने से संतुलित पोषण मिलता है।

वृद्धि औरउत्पादन पर प्रभावः

नेपियर घास पशुओं की वृद्धि, दूध उत्पादनऔरसंपूर्ण स्वास्थ्य में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

- ✓ **दूध उत्पादन में वृद्धिः** यह गाय और भैंसों में दूध उत्पादन को बढ़ाने में सहायक होती है क्योंकि यह ऊर्जा और प्रोटीन का अच्छा स्रोत है।
- ✓ **वजन बढ़ाने में सहायकः** मवेशियों के तेजी से वजन बढ़ाने में मदद करती है, जिससे गोवंश और भेड़-बकरियों के लिए यह एक लाभकारी चारा है।
- ✓ **पाचन में सुधारः** यह उच्च पाचकता वाली घास है, जिससे पशुओं कोअपच या अन्य पाचन संबंधी समस्याएं नहीं होतीं।
- ✓ **कम चारे की लागतः** चूंकि यह बार-बार कटाई के बाद भी उगती है, इसलिए किसानों को अधिक लागत वहन नहीं करनी पड़ती, जिससे पशुपालन व्यवसाय अधिक लाभकारी बनता है।

नेपियर घास पशुपालकों के लिए एक उच्च उत्पादक, पोषण युक्त और सस्ता चारा विकल्प है। इसके उचित प्रबंधन से पूरे वर्ष पशुओं को हरा चारा उपलब्ध कराया जा सकता है, जिससे दूध उत्पादनऔर पशुओं की वृद्धि में सुधार होता है। यदि किसान वैज्ञानिक विधियों से इसकी खेती करें, तो यह पशुपालन को आर्थिक रूप से और भी लाभदायक बना सकता है।